Om Jai Shiv Omkara | By Rajendra Jain |

ॐ जय शिव ओंकारा
ॐ जय शिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव
अर्धांगी धारा

ॐ जय शिव ओंकारा

एकानन चतुरानन
पंचानन राजे
हंसानन गरुड़ासन
वृषवाहन साजे

ॐ जय शिव ओंकारा

दो भुज चार चतुर्भुज
दसभुज अति सोहे
तीनों रूप निरखता
त्रिभुवन जन मोहे

ॐ जय शिव ओंकारा

अक्षमाला वनमाला
रुंडमाला धारी
चंदन मृगमद सोहै
भाले शशिधारी

ॐ जय शिव ओंकारा

श्वेतांबर पीतांबर
बाघंबर अंगे
सनकादिक गरुड़ादिक
भूतादिक संगे

ॐ जय शिव ओंकारा

कर के मध्य कमंडलु
चक्र त्रिशूल धर्ता
जगकर्ता जगभर्ता
जगपालन करता

ॐ जय शिव ओंकारा

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव
जानत अविवेका
प्रणवाक्षर के मध्ये
ये तीनों एका

ॐ जय शिव ओंकारा

काशी में विश्वनाथ विराजत
नंदी ब्रह्मचारी
नित उठि भोग लगावत
महिमा अति भारी

ॐ जय शिव ओंकारा

त्रिगुण स्वामी जी की आरती
जो कोई नर गावे
कहत शिवानंद स्वामी
मनवांछित फल पावे

ॐ जय शिव ओंकारा

https://bhaktivandana.com/lyrics/om-jai-shiv-omkara-by-rajendra-jain/